

SHRI PANDIT SHYAMLAL CHATURVEDI

Shri Pandit Shyamlal Chaturvedi is the ex-chairperson of Chhattisgarh Rajbhasha Aayog (Cabinet minister rank) and still working as a freelance Journalist. He impersonated many roles in his inspiring life as a poet, a writer, a Journalist, a Teacher, an Editor and an Author.

2. Born on February 20, 1926 in Village Kotmi, Shri Chaturvedi was ranked 1st in 4th standard at the age of 9 but due to discontinued academic life, in 1941 he passed his 5th standard from Akaltara Middle School and Matric from Banaras in 1956. He received his BA degree in 1968 and MA degree in 1976 from Pt. Ravishankar University Raipur and it was a unique coincidence that his own poem was in the syllabus of an optional subject 'Chhattisgarhi' in MA, so he achieved an opportunity to answer his own poem.

3. Shri Chaturvedi has been so fond of classical music that he acted "Krishna" in Rasleelas held in Nariyara (1940-1945). He was the second 'Chhattisgarhi' poet whose poem was broadcast from Nagpur AIR in 1949 and later by, Bhopal, Raipur & Bilaspur AIR. He also did poetry and storytelling in Doordarshan Raipur, Bhopal and Delhi. His two Chhattisgarhi folk tales were selected by Indian Doordarshan for UNESCO 20-20 folk tales. As a Journalist initially he had been representative in newspapers like, Karamveer, Mahakoushal, and then became 'Bilaspur District Representative' of Navbharat (Nagpur), Navbharat Times (Calcutta), Jansatta (Delhi), Hindustan News Agency (1952-1979). Since 1982 he served as 'District Representative' in Nai Duniya (Indore) and later as 'Chhattisgarh State Representative' in Dainik Nai Duniya Bhopal till 2008. He also served as Editor in Dainik Lokswar News Paper, Shikshak Sandesh and Kshitij Magazines.

4. Since 1942, Shri Chaturvedi's articles had been published in Sukavi, Bal Sakha, Dharmyug, Hindustan, Kadambini, Kalpana, Vasudha, Madhya Pradesh Sandesh, and daily News Papers of Madhya Pradesh. His remarkable creations include "Ram Banwas" in 1954 and "Parra Bhar Lai" in 1985 an anthology of Chhattisgarhi poetry and "Bholwa Bholaram Banis" in 1995 — is an anthology of Chhattisgarhi stories and "Mere Nibandh" in 2003 — an anthology of Hindi Essays. Researches are done by scholars taking his Literature and Personality as a subject for Ph.d. degree awarded by Pt. Ravishankar University Raipur during 1998-99 and 2013-14. As a public activist, he led many organizations as Chairperson of Co-operative Printing Press, as member in C.G. Hindi Granth Academy Raipur and as Vice-Chairman in C.G. Hindi Sahitya Academy. In 1959, his efforts made Kotmi Sonar first flag halt station in Bilaspur Railway Divison. He was elected as Sarpanch of Kotmi Sonar unopposed and his panchayat was declared the best on the occasion of '100th birth anniversary of Mahatama Gandhi' in 1969.

5. Shri Chaturvedi has been the recipient of numerous awards and honors. He received honor from 'Hindustan News Agency' Nagpur, Bhopal and also from 'Bhartendu Sahitya Samiti'; 'M.P. Shram Jivi Ptrakar Sangh' Raipur; 'M.P. Hindi Sahitya Sammelan' Bhopal (1987); Mahakoushal Lok Mahotsav Samiti' Jabalpur; `Ganesh Shanker Vidhyarthi Memorial Trust' Bhopal (1997); `Thakur Pyarelal Singh Smriti Alankaran' Raipur (1999); Maharastra Mandal Raipur — `Mukti Bhodh Honour' (2000), 'Chhattisgarh Bhasha Sahitya Samiti' Raipur; Vasundhara Samman' (2002) and Srijan Samman — 'Hindi Gaurav' (2003) Raipur etc. Chhattisgarh Government conferred on him "Pt. Sunder Lal Sharma Award" in 2004. He also recieved `Ramgadh Mahotsav Ambikapur' (2009), "Mandal Ratna Samman' — Shri Ekrasanand Aashram Mainpuri (UP), 'Chhattisgarh Ratna Award' by Pt. Ravishankar University Raipur (2013) and several awards and honors from different social and cultural organizations.



श्री पंडित श्यामलाल चतुर्वेदी

श्री पंडित श्यामलाल चतुर्वेदी छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग (मंत्रीपरिषद के मंत्री का रैंक) के पूर्व अध्यक्ष हैं और अभी भी एक फ्रीलांस पत्रकार के एक रूप में कार्य कर रहे हैं। आपने अपने प्रेरणादायी जीवन में एक कवि, एक लेखक, एक पत्रकार, एक अध्यापक, एक संपादक और एक ग्रन्थकार के रूप में कई भूमिकाओं को मूर्त रूप प्रदान किया है।

2. आपका जन्म 20 फरवरी, 1926 को गांव कोटमी में हुआ था। आपने 9 वर्ष की उम्र में चौथी कक्षा में प्रथम रैंक हासिल की थी लेकिन शैक्षिक जीवन अनवरत न रहने के कारण आपने वर्ष 1941 में अकालतारा मिडिल स्कूल से पांचवी कक्षा पास की तथा वर्ष 1956 में बनारस से मैट्रिक की परीक्षा पास की थी। आपने पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर से वर्ष 1968 में बी ए की उपाधि तथा 1976 में एम ए की उपाधि प्राप्त की और यह एक अनोखा संयोग था कि एम ए में एक वैकल्पिक विषय 'छत्तीसगढ़ी' के पाठ्यक्रम में आपकी स्वयं की कविता शामिल थी, इसलिए आपको अपनी ही कविता का उत्तर देने का एक अवसर प्राप्त हुआ।

3. आपको शास्त्रीय संगीत का इतना अधिक शौक था कि आपने नरियारा में आयोजित की जाने वाली रास लीलाओं (1940-1945 तक) में ''कृष्ण'' का चरित्र अभिनीत किया। आप ऐसे दूसरे छत्तीसगढ़ी कवि हैं जिनकी कविता को वर्ष 1949 में नागपुर आकाशवाणी से प्रसारित किया गया और बाद में इसे भोपाल, रायपुर और विलासपुर के आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित किया गया। आपने रायपुर, भोपाल तथा दिल्ली दूरदर्शन में काव्यात्मकता और कहानी सुनाने का भी कार्य किया। आपकी दो छत्तीसगढ़ी लोक कथाओं को भारतीय दूरदर्शन द्वारा यूनेस्को की 20-20 लोक कथाओं के लिए चुना गया था। एक पत्रकार के रूप में, आरंभिक तौर पर आप कर्मवीर, महाकौशल जैसे समाचार- पत्रों के प्रतिनिधि रहे और इसके उपरांत नवभारत (नागपुर), नवभारत टाइम्स (कलकता), जनसत्ता (दिल्ली), हिन्दुस्तान न्यूज एजेंसी (1952-1979) के 'बिलासपुर डिस्ट्रिक्ट रिप्रेंजेटेटिव' बनें। वर्ष 1982 से आपने नई दुनिया (इंदौर) में 'जिला प्रतिनिधि' तथा इसके बाद वर्ष 2008 तक दैनिक नई दुनिया (भोपाल) में 'छत्तीसगढ़ राज्य प्रतिनिधि' के रूप में अपनी सेवाएं दी। आपने दैनिक लोक स्वर समाचार पत्र, शिक्षक संदेश और क्षितिज पत्रिकाओं में संपादक के रूप में भी अपनी सेवाएं दीं।

4. वर्ष 1942 से आपके लेख सुकवि, बाल सखा, धर्मयुग, हिन्दुस्तान, कादम्बिनी, कल्पना, वसुधा, मध्यप्रदेश संदेश और मध्यप्रदेश के दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहे हैं। आपकी उल्लेखनीय रचनाओं में, 1954 में ''राम बनवास'' तथा 1995 में ''पर्राभरलाई'' छत्तीसगढ़ी कविताओं का एक संग्रह है तथा 1995 में ''भोलवा भोलाराम बनिस'' छत्तीसगढ़ी कहानियों का एक संग्रह और वर्ष 2003 में ''मेरे निबंध'' हिन्दी निबंधों का एक संग्रह है। आपके साहित्य एवं व्यक्तित्व को लेकर पीएचडी उपाधि के एक विषय के रूप में शोधार्थियों द्वारा शोध किये जाते हैं और पंडित रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर द्वारा वर्ष 1998-99 और 2013-14 की अवधि के दौरान पीएचडी उपाधियां प्रदान की गईं। एक सार्वजनिक कार्यकर्ता के रूप में आपने कोआपरेटिव प्रिंटिंग प्रेस के अध्यक्ष की हैसियत से कई एक संगठनों का नेतृत्व किया और एक सदस्य के रूप में सी.जी. हिन्दी ग्रंथ अकादमी रायपुर तथा सी.जी. हिन्दी साहित्य अकादमी में उपाध्यक्ष के रूप में नेतृत्व प्रदान किया। वर्ष 1959 में आपके प्रयासों से कोटमी सोनार, बिलासपुर रेलवे डिवीजन में पहला फ्लैग हाल्ट स्टेशन बना। आप कोटमी सोनार के सर्वसम्मति से सरपंच चुने गए तथा आपकी पंचायत को वर्ष 1969 में महात्मा गांधी की 100वीं जन्म वर्षगांठ के अवसर पर सर्वोत्तम पंचायत घोषित किया गया था।

5. आपको अनेक पुरस्कार तथा सम्मान प्राप्त हुए। आपको ''हिन्दुस्तान न्यूज एजेंसी'' नागपुर और भोपाल के साथ-साथ'' भारतेन्दु साहित्य समिति' की ओर से सम्मान;''एम.पी. श्रमजीवी पत्रकार संघ'' रायपुर; 'एम.पी. हिन्दी साहित्य सम्मेलन' भोपाल (1987); महा कौशल लोक महोत्सव समिति जबलपुर; गणेश शंकर विद्यार्थी मेमोरियल ट्रस्ट, भोपाल (1997); ठाकुर प्यारेलाल सिंह स्मृति अलंकरण, रायपुर (1999); महाराष्ट्र मंडल,रायपुर - मुक्ति बोध सम्मान (2000); छत्तीसगढ़ भाषा साहित्य समिति, रायपुर; वसुंधरा सम्मान (2002) तथा सृजन सम्मान -''हिन्दी गौरव''(2003) रायपुर आदि से गौरवान्वित किया गया। वर्ष 2004 में आपको छत्तीगढ़ सरकार ने ''पंडित सुन्दरलाल शर्मा पुरस्कार'' से अलंकृत किया। आपको 'रामगढ़ महोत्सव अम्बिकापुर (2009),'मंडल रत्न सम्मान'- श्री एकरसानन्द आश्रम मैनपुरी (उ.प्र.), पंडिल रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर (2013) द्वारा 'छत्तीसगढ़ रत्न पुरस्कार' तथा विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठनों से कई एक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए।